AN INVESTIGATION OF THE ROLE OF SOCIAL ACCEPTANCE IN THE CONTEXT OF WOMEN'S IDENTITY IN BERTOLT BRECHT'S STORY 'THE UNWURDIGE GRYZIN'

बर्टोल्ट ब्रेख्त की कहानी 'दी उनव्यूर्डिगे ग्रायजिन' में महिला अस्मिता के सन्दर्भ में सामाजिक स्वीकृति की भूमिका की पड़ताल

Roshan Lal Jahel [1], Om Prakash [2]

[1] Assistant Professor, Department of German Studies, Central University of Gujarat, Sector 29, Gandhinagar, Gujarat 382030
[2] Assistant Professor, Department of German Studies, Banaras Hindu University, Varanasi, Uttar Pradesh 221005

DOI
10.29121/shodhkosh.v5.i6.2024.4388

Funding: This research received no specific grant from any funding agency in the public, commercial, or not-for-profit sectors.

Copyright: © 2024 The Author(s). This work is licensed under a Creative Commons Attribution 4.0 International License.

With the license CC-BY, authors retain the copyright, allowing anyone to download, reuse, re-print, modify, distribute, and/or copy their contribution. The work must be properly attributed to its author.

ABSTRACT

English: This research paper investigates the role of women's identity and social acceptance in Bertolt Brecht's work 'The Unwurdige Gryzin'. This story depicts the last two years of an old woman's life, where she struggles for her freedom and identity. Brecht has effectively highlighted the conflict between a woman's personal freedom and social acceptance. This story combines feminism and psychological aspects and raises the question whether women empowerment is possible without a change in society's attitude. Brecht has criticized the structures and traditional beliefs of society, which deprive women of their rights and freedom. Through this work, Brecht shows that women empowerment is impossible without a change in the attitude of society.

Hindi: यह शोध आलेख बर्टोल्ट ब्रेख्त की रचना 'दी उनव्यूर्डिगे ग्रायजिन' में महिला अस्मिता और सामाजिक स्वीकृति की भूमिका की पड़ताल करता है। इस कहानी में एक वृद्ध महिला के जीवन के अंतिम दो वर्षों का चित्रण किया गया है, जहां वह अपनी स्वतंत्रता और पहचान के लिए संघर्ष करती है। ब्रेख्त ने महिला की व्यक्तिगत स्वतंत्रता और सामाजिक स्वीकृति के बीच के द्वंद को प्रभावी रूप से उजागर किया है। यह कहानी नारीवाद और मनोवैज्ञानिक पहलुओं को जोड़ते हुए यह सवाल उठाती है कि क्या समाज के दृष्टिकोण में बदलाव के बिना महिला सशक्तिकरण संभव है। ब्रेख्त ने समाज की संरचनाओं और पारंपरिक मान्यताओं की आलोचना की है, जो महिलाओं को उनके अधिकारों और स्वतंत्रता से वंचित करती हैं। इस रचना के माध्यम से ब्रेख्त यह दर्शाते हैं कि समाज के दृष्टिकोण में बदलाव के बिना महिला सशक्तिकरण असंभव है।

Keywords: Female Identity, Feminism, Social Acceptance, Bertolt Brecht, Feminist Discourse, German Literature, Traditional Beliefs, Individual Freedom, Empowerment, Acceptance and Identity, स्त्री अस्मिता, नारीवाद, सामाजिक स्वीकृति, बर्टोल्ट ब्रेख्त, स्त्री विमर्श, जर्मन साहित्य, पारंपरिक मान्यताएँ, व्यक्तिगत स्वतंत्रता, सशक्तिकरण, स्वीकृति और पहचान।

1. प्रस्तावना

बर्टोल्ट ब्रेख्त (1898-1956) एक बहुमुखी कलाकार थे. वे एक नाटककार, कवि, और रंगमंच निर्देशक थे। उन्होंने कहानियों, कविताओं और नाटकों में सामाजिक और राजनीतिक बदलाव लाने पर ज़ोर दिया दिया। उनकी कहानी 'दी उनव्यूर्डिगे ग्रायजिन'(1) एक ऐसी बुजुर्ग महिला की कहानी है, जो अपनी पारंपरिक भूमिका को त्यागकर स्वतंत्रत जीवन जीने का प्रयास करती है। यह कहानी समाज, परिवार और महिलाओं की पारंपरिक भूमिकाओं पर गहरा कटाक्ष करती है। कहानी की नायिका एक बुजुर्ग महिला है, जो अपने जीवन के अंतिम पड़ाव पर पहुँच चुकी है। उसके पति की मृत्यु हो चुकी है और उसके बच्चे अपने-अपने परिवारों के साथ दूर जा बसे हैं। समाज और परिवार के लोग अब उससे अपेक्षा करते हैं कि वह एक "सम्मानजनक" जीवन जिए।

कहानी की नायिका का बर्ताव समाज की पारंपरिक धारणाओं के बिल्कुल विपरीत है। अपने जीवन के अंतिम पड़ाव पर पहुँचने के बावजूद वह एक नई ऊर्जा और स्वतंत्रता के साथ जीने का निश्चय करती है। हमारा समाज और परिवार *वृद्धावस्था* को एक विशेष नज़रिये से देखता है, जिसमें वृद्ध से संयम, शांति और पारंपरिक कर्तव्यों का पालन अपेक्षित होता है। लेकिन यह महिला इन उम्मीदों और मान्यताओं को अनदेखा कर देती है और एक अलग, असामान्य जीवनशैली अपनाती है। वह अपनी दिनचर्या में बदलाव करती है और नए अनुभवों के लिए उत्सुक रहती। परिवार के लिए उसकी यह स्वतंत्रता एक समस्या बन जाती है, क्योंकि उन्हें लगता है कि वृद्धा को अब एक 'शालीन' और परिवार-उन्मुख जीवन जीना चाहिए। वे उसे अपनी देखभाल के लिए अपने पास बुलाने का प्रयास करते हैं, लेकिन वृद्ध महिला अपने निर्णयों में दृढ़ रहती है।

इस आलेख में बर्टोल्ट ब्रेख्त की कहानी की मुख्य पात्र इस वृद्ध महिला की स्वतंत्रता की भावना और समाज द्वारा निर्धारित मापदंडों के विरुद्ध उसके अप्रत्यक्ष प्रतिरोध की विवेचना की गई है। जूडिथ बटलर और सिमोन द बोवुआर जैसी नारीवादी चिंतकों के विचारों को रोशनी में इस बुजुर्ग महिला द्वारा अपने परिवार और समाज की सीमित धारणाओं को अस्वीकार करते हुए अपनी स्वतंत्र जीवन शैली को बनाए रखने के प्रयासों का मूल्यांकन करने का प्रयास किया गया है।

ब्रेख़्त के साहित्य में नारीवाद:

ब्रेख्त की रचनाओं के नारीवादी दृष्टिकोण से विश्लेषण की संभावनाओं के बारे में सारा लेनॉक्स का मानना है कि बेर्टोल्ट ब्रेख्त ने अपनी साहित्यक रचनाओं में महिलाओं के किरदारों का प्रयोग प्रायः अपने राजनैतिक और सामाजिक विचारों को प्रभावी ढंग से प्रस्तुत करने के साधन (demonstration objects) के रूप में किया, और उनके नाटकों में महिलाओं की स्वतंत्रता और अधिकारों से जुड़े मुद्दों पर विशेष ध्यान नहीं दिया। लेनॉक्स के अनुसार ब्रेख्त वास्तविक महिलाओं को उनके पूर्ण आयामों में देखने में असमर्थ थे, और विशेष रूप से उनकी यौनिकता को स्वीकार करने में असमर्थ थे। इस प्रकार उनकी कृतियाँ केवल सामान्य रूढ़ियों के माध्यम से ही चित्रण करने में सफल होती हैं।(2)

लेकिन लॉरीन नुस्स्बाउम सारा लेनॉक्स के इन विचारों से पूर्णतया सहमत नहीं है। अपने आलेख “The Evolution of the Feminine Principle in Brecht's Work” में नुस्स्बाउम बताती हैं कि लेनॉक्स की चिंताएं ब्रेख़्त की शुरुआती रचनाओं के संदर्भ में तो सही हैं, लेकिन उनकी बाद की रचनाओं में महिला पात्रों की प्रस्तुति में क्रमिक विकास दिखाई देता है। नुस्स्बाउम अनुसार ब्रेख़्त के शुरुआती महिला पात्र अक्सर सामाजिक रूढ़ियों में फिट बैठते हैं, पर उनकी बाद की कृतियों में महिलाओं को विशेष रूप से सामाजिक उथल-पुथल के दौर में दृढ़ता और आत्मनिर्भरता का प्रतीक बनते हुए दिखाया गया है। ‘दी कोयफ़ेरिन’ और ‘दी उनव्यूर्डिगे ग्रायजिन’ जैसी रचनाओं का उदाहरण देते हुए नुस्स्बाउम बताती हैं कि ब्रेख़्त ने वृद्ध महिला पात्रों की जीवंत स्वतंत्रता को विषय के रूप में अपनाया। ये पात्र केवल व्यक्तिगत जीवन शक्ति नहीं प्रदर्शित करते, बल्कि वे अपने गैर-पारंपरिक आचरण के मध्यम से नए आदर्शों की मिसाल के रूप में सामने आते है।(3)

सिमोन द बोवुआर का प्रसिद्ध कथन "कोई जन्म से स्त्री नहीं होता, बल्कि स्त्री बनता है"(4) उनके नारीवाद और महिलाओं की सामाजिक पहचान निर्माण के संदर्भ में उनके विचारों को स्पष्ट करता है। उनके अनुसार, स्त्रीत्व केवल एक प्राकृतिक स्थिति नहीं है, जिसे कोई महिला जन्म से ही अपने साथ लेकर चलती है, बल्कि यह एक पूरी “सभ्यता” के योगदान से निर्मित एक सामाजिक और सांस्कृतिक अवधारणा है। समाज यह निर्धारित करता है कि एक महिला को कैसे सोचना, महसूस करना और व्यवहार करना चाहिए। इसलिए, "स्त्री होना" एक सक्रिय प्रक्रिया है, न कि बस जन्म से तय हुई पहचान। इस प्रकार महिला के रूप में उसकी पहचान को समाज में उसके द्वारा किए गए कार्यों, उसकी भूमिका और अपेक्षाओं के आधार पर निर्मित किया जाता है। वह 'स्त्री' बनने की प्रक्रिया में लगातार सामाजिक मानदंडों का पालन करती है।(5)

जूडिथ बटलर बोवुआर के इन विचारों को आधार बना कर अपने *परफॉर्मेटिविटी सिद्धांत* (Theory of Perfomitivity) को विकसित करती है। इस सिद्धांत के अनुसार, जेंडर कोई स्थायी या प्राकृतिक गुण नहीं है, बल्कि सामाजिक रूप से निर्मित पहचान है, जो निरंतर दोहराए जाने वाले, विशेष ढंग से निर्वहन किए गए आचरण से निर्मित होती है, और अपनी इस सामाजिक पहचान को निरंतर अपनी सामाजिक भूमिकाओं के निर्वहन के माध्यम से प्रदर्शित किया जाता है। ये प्रदर्शन बार-बार दोहराए जाते हैं, और इन्हीं के माध्यम से जेंडर की पहचान को निर्मित और सुदृढ़ किया जाता है। वह लिखती हैं:

“If gender is instituted through acts which are internally discontinuous, then the appearance of substance is precisely that, a constructed identity, a performative accomplishment which the mundane social audience, including the actors themselves, come to believe and to perform in the mode of belief.” (6)

इस प्रकार महिलाओं की सामाजिक पहचान ना केवल समाज द्वारा तय की जाती है, बल्कि यह *कार्यात्मक प्रदर्शन* (7) के माध्यम से भी निर्मित होती है। शरीर, शब्दों, और व्यहार के माध्यम से अपने सामाजिक पहचान का प्रदर्शन किया जाता हैं। उदाहरण के लिए, महिला होने के नाते, कोई अपने शरीर को एक विशेष तरह से प्रस्तुत करती है, उसकी चाल-ढाल, बात करने का तरीका, आदि, और उसका व्यवहार उसे एक महिला के रूप में स्थापित करते हैं। इस व्यवहार का निरंतर दोहराया जाना वृहत रूप से महिलाओं की सामाजिक पहचान का आधार बन जाता है। बटलर के अनुसार, यही दोहराव हमें महिलाओं की सामाजिक पहचान को नया रूप देने का मौका भी देता है, जहाँ इस शैली को बदलकर या इसके परंपरागत रूप को तोड़कर जेंडर की पहचान का नया अर्थ विकसित किया जा सकता है। वह लिखती हैं:

"If the ground of gender identity is the stylized repetition of acts through time, and not a seemingly seamless identity, then the possibilities of gender transformation are to be found in the arbitrary relation between such acts, in the possibility of a different sort of repeating, in the breaking or subversive repetition of that style."(8)

इस प्रकार बटलर दावा करती है कि महिला की सामाजिक पहचान एक प्रदर्शन होने ने नाते हमारे पास इसे बदलने की पूरी संभावना होती है। चूँकि जेंडर कोई स्थिर पहचान नहीं है, बल्कि बार-बार अपनी भूमिका के निर्वहन का परिणाम है, तो यह व्यवहार समय के साथ बदल सकता है और जेंडर की पारंपरिक धारणाओं को चुनौती दे सकता है। उदाहरण के लिए, यदि एक महिला पारंपरिक महिला भूमिका को अस्वीकार करते हुए वह एक सशक्त और स्वतंत्र भूमिका निभाती है, तो वह जेंडर की परंपरागत समझ को पलट सकती है।

वृद्धा का आचरण और सामाजिक अपेक्षाएँ:

बर्टोल्ट ब्रेख्त अपनी कहानी की मुख्य पात्र सत्तर साल की विधवा श्रीमती बी के चरित्र के माध्यम से, जो अपने पति की मृत्यु के बाद, बुजुर्ग महिलाओं से अपेक्षित आचरण के विपरीत काम करना शुरू कर देती है, व्यक्तित्व और सामाजिक अपेक्षाओं के विषयों की खोज करते हैं। समाज श्रीमती बी से अपेक्षा करता है कि वह एक शांत, संयमित जीवन जिएं। खुद को परिवार, घरेलू कर्तव्यों और चर्च के लिए समर्पित करें। उनके बच्चे अपेक्षा करते हैं कि वह अपने घर की सीमाओं के भीतर रहें, उनके घरों में मदद करें और एक शांत उपस्थिति बनाए रखें जो कि उम्रदराज महिलाओं के लिए पारंपरिक मानदंडों के अनुकूल है। इन अपेक्षाओं के विपरीत, श्रीमती बी अपनी स्वतंत्रता की खोज करना और एक स्वतंत्र जीवन विकसित करना शुरू करती हैं। वह विभिन्न पृष्ठभूमि के लोगों से दोस्ती करती है, सामुदायिक गतिविधियों में भाग लेती है और यहां तक कि कैफे और सिनेमा जैसी जगहों पर भी जाना शुरू कर देती है - ऐसी जगहें जो उनकी उम्र और स्थिति के किसी व्यक्ति के लिए अनुपयुक्त मानी जाती हैं। उनके परिवार को उनका यह परिवर्तन सदमा देता है। उनके लिए, वह एक सम्माननीय, आज्ञाकारी मातृ सत्ता के रूप में अपनी भूमिका निभाने में विफल हो रही है।

जेंडर और आयु की परंपरागत सीमाओं से परे नई पहचान की खोज:

ब्रेख्त श्रीमती बी. के विद्रोह का उपयोग इस बात की आलोचना के रूप में करते हैं कि समाज किस तरह से व्यक्तिगत स्वतंत्रता को बाधित करता है, विशेष रूप से बुजुर्गों के बीच। श्रीमती बी. के पति की मृत्यु के बाद उनका परिवार उनकी रजामंदी की परवाह किए बिना आपस में तय करने का प्रयास करता है कि अब उनको अब अपना जीवन किस तरह बिताना चाहिए: "बच्चों ने पत्रों में विचार किया कि दादी के साथ क्या किया जाए। एक बेटा उन्हें अपने पास घर देने का प्रस्ताव रखता, जबकि मुद्रक बेटा अपनी परिवार के साथ उनके घर आना चाहता था. लेकिन बूढ़ी महिला ने इन प्रस्तावों को ठुकरा दिया और अपने हर उस बच्चे से, जो सक्षम था, केवल थोड़ी आर्थिक सहायता ही लेने की इच्छा जताई।(शाब्दिक अनुवाद)" (9)

श्रीमती बी. का मुद्रक बेटा उनसे यह उम्मीद भी करता है कि उसकी माँ अपने बड़े से घर में उसके परिवार को रहने दे क्योंकि वह एक छोटे से घर में अपने बड़े से परिवार के साथ रहता था। लेकिन श्रीमती बी. इससे इनकार कर देती है और वह अपने बेटे के परिवार के साथ अपनी इच्छानुसार केवल सीमित संपर्क बनाए रखना चाहती है। वह हर रविवार दोपहर बच्चों को कॉफी पर बुलातीं। कभी-कभी, तिमाही में एक-दो बार, वह बेटे के घर जातीं और बहू की कामकाज में कुछ मदद करतीं।(10) श्रीमती बी. के बदलते व्यवहार की कई बातें उनके बेटे को बहुत अखरती है। जैसे की उनका सिनेमा जाना, बाहर खाना खाने जाना और मोची की दुकान पर जाकर वहाँ लोगों के साथ समय बिताना:

"मुद्रक ने संक्षिप्त में बताया कि वह सिनेमा जाती हैं। यह समझना ज़रूरी है कि उस समय यह कोई साधारण बात नहीं थी, उनके बच्चों की नजर में तो बिल्कुल नहीं। सिनेमा उन दिनों वैसा नहीं था, जैसा आज है। यह जगह अक्सर पुराने क्रीड़ा हॉल में बनाई जाती, जहां वेंटिलेशन खराब होता, और बाहर बड़े-बड़े पोस्टर लगे रहते थे, जिन पर हत्याएं और त्रासदियाँ दिखाए जाते। वहां आमतौर पर किशोर ही जाते थे या फिर अंधेरे की वजह से प्रेमी युगल। एक अकेली वृद्ध महिला वहां निश्चित रूप से असामान्य लगती होगी।"(11) (शाब्दिक अनुवाद)

यहाँ श्रीमती बी. के व्यवहार को लगातार सामाजिक मापदंडों के अनुसार परखा जाता है और उनके व्यवहार को "असम्मानजनक" और "असामान्य" बताया जाता है। श्रीमती बी. की नई आदतों को परिवार "विलासिता" और "फ़िज़ूलखर्ची" बताता है, जो उन्हें सामाजिक दृष्टि में एक अमान्य आचरण प्रतीत होता है।

"वह अक्सर एक गरीब और बदनाम गली के मोची की दुकान में जाती थीं, जहाँ विशेषकर दोपहर में कई " ऐसे लोग बैठे रहते थे, जो "सम्मानजनक" लोगों की श्रेणी में नहीं आते हैं, जैसे कि बेरोज़गार वेटर्स और कारीगर। वह मोची एक अधेड़ उम्र का व्यक्ति था, जो पूरी दुनिया घूम चुका था, लेकिन कुछ ख़ास कामियाबी हासिल नहीं पाया था। ऐसा भी कहा जाता था कि वह शराब पीता था। वह निश्चित रूप से मेरी दादी के लिए एक उपयुक्त संगति नहीं था।"(12) (शाब्दिक अनुवाद)

इस आचरण के कारण उनकी दिमागी स्थिति को लेकर भी संशय होने लगता है। जब उनके मुद्रक बेटे को श्रीमती बी. के घुड़सवारी देखने के लिए दूसरे शहर जाने की बात का पता चलता है, तो वह पूरी तरह से चिंतित हो जाता है और डॉक्टर को बुलाने का विचार करने लगता है। समाज और परिवार के सदस्यों की चिंताओं के परे श्रीमती बी. अपने पति की मृत्यु के बाद अपनी शर्तों पर अपनी दूसरी जिंदगी जीती है:

"अगर देखा जाए तो उन्होंने दो जिंदगियाँ जीं। पहली ज़िंदगी, जो उन्होंने बेटी, पत्नी और माँ के रूप में बिताई, और दूसरी, जो उन्होंने सिर्फ़ श्रीमती बी. के रूप में, एक स्वतंत्र महिला के रूप में, बिना किन्हीं जिम्मेदारियों के, सादगी और कम ज़रूरतों के साथ। जीवन के अंतिम छह महीनों में उन्होंने कुछ ऐसे छोटे-छोटे आनंद लिए जिनके बारे में आम लोग सोच भी नहीं सकते।"(13) (शाब्दिक अनुवाद)

जैसा कि बटलर ने स्पष्ट किया है, यदि जेंडर को एक प्राकृतिक या पूर्वनिर्धारित तथ्य के रूप में स्वीकार कर लिया जाता है, तो लोग सामाजिक मानदंडों को चुनौती देने और उन्हें पुनः आकार देने की अपनी क्षमता खो देते हैं।(14) बटलर की इस आशंका के विपरीत, श्रीमती बी. सामाजिक मानदंडों को चुनौती देने और उन्हें पुनः आकार देने की अपनी क्षमता को प्रमाणित करते हुए पारंपरिक सामाजिक भूमिकाओं और अपेक्षाओं से बाहर जाकर अपना जीवन जीती हैं: "वह बिलकुल अकेली नहीं थीं। मोची की दुकान पर हमेशा जिंदादिल लोग रहते थे और वहाँ काफी बातें होती थीं। उनके लिए वहाँ एक बोतल रेड वाइन भी रखी रहती थी, जिससे वह अपना गिलास भरतीं, जबकि दूसरे लोग अपनी कहानियाँ सुनाते और कस्बे की प्रतिष्ठित हस्तियों पर टिप्पणी करते।"(15) (शाब्दिक अनुवाद)

उनकी नई-नई स्वतंत्रता सीमित सामाजिक मानदंडों के विरुद्ध मानवीय गरिमा के दावे का प्रतीक है। उनके परिवार का प्रतिरोध, किसी की खुशी और आत्म-अभिव्यक्ति की कीमत पर भी, अनुरूप होने के लिए सामाजिक दबाव को दर्शाता है। इस कथा के माध्यम से, ब्रेख्त पाठकों को इन प्रतिबंधों के मूल्य पर सवाल उठाने के लिए चुनौती देते हैं और वृद्ध वयस्कों के जीवन में स्वायत्तता और खुशी की अक्सर अनदेखी की जाने वाली क्षमता को उजागर करते हैं।

2. निष्कर्ष

'दी उनव्यूर्डिगे ग्रायजिन' में बर्टोल्ट ब्रेख्त सामाजिक सम्मान और महिला पहचान पर इसके प्रभाव की सूक्ष्म आलोचना प्रस्तुत करते हैं, विशेष रूप से उम्र बढ़ने और वर्ग के संदर्भ में। श्रीमती बी की कहानी के माध्यम से, ब्रेख्त बुजुर्ग महिलाओं, विशेष रूप से कामकाजी वर्ग की पृष्ठभूमि से आने वाली महिलाओं के बारे में सामाजिक अपेक्षाओं को चुनौती देते हैं। एक निष्क्रिय, "सम्मानजनक" विधवा से एक ऐसे व्यक्ति में उनका परिवर्तन जो व्यक्तिगत स्वतंत्रता और आनंद को प्राथमिकता देती है, बुजुर्ग महिलाओं की नैतिक रूप से ईमानदार और घरेलू व्यक्तियों के रूप में पारंपरिक छवि को बाधित करता है। ऐसा करने में, ब्रेख्त बताते हैं कि कैसे ये अपेक्षाएँ महिलाओं की पहचान को बाधित करती हैं, उन्हें प्रतिबंधात्मक सामाजिक मानदंडों के अनुरूप होने के लिए मजबूर करती हैं जो उनकी एजेंसी और व्यक्तित्व को नकारते हैं। श्रीमती बी की यात्रा को आत्म-खोज के रूप में चित्रित करके जो अंततः समाज द्वारा उसे हाशिए पर और निंदा की ओर ले जाती है, ब्रेख्त सामाजिक नियंत्रण के एक उपकरण के रूप में सम्मान की भूमिका को रेखांकित करते हैं, वर्ग और लिंग मानदंडों को मजबूत करते हैं जो आत्म-अभिव्यक्ति पर अनुपालन का पक्ष लेते हैं। यह कहानी ब्रेख्त के इस आलोचनात्मक दृष्टिकोण को दर्शाती है कि कैसे सम्मान का उपयोग अनुरूपता को लागू करने के लिए किया जाता है, खासकर उन महिलाओं के लिए जो पारंपरिक भूमिकाओं को चुनौती देती हैं। फ्रा श्रीमती बी द्वारा इन मानदंडों को अस्वीकार करने पर प्रकाश डालते हुए, ब्रेख्त एक ऐसे समाज की वकालत करते हैं जिसमें व्यक्तिगत पहचान उम्र, लिंग या वर्ग की बाधाओं से बंधी नहीं होती।

निष्कर्ष में कहा जा सकता है कि 'दी उनव्यूर्डिगे ग्रायजिन' सम्मान की सामाजिक धारणाओं द्वारा लगाई गई सीमाओं पर एक शक्तिशाली टिप्पणी के रूप में कार्य करता है एवं ब्रेख्त के महिला स्वायत्तता के समर्थन और व्यक्तिगत स्वतंत्रता को सीमित करने वाली संरचनाओं की उनकी आलोचना को प्रकट करता है। खासकर हाशिए पर रहने वाली महिलाओं के लिए। श्रीमती बी की अवज्ञा के माध्यम से, ब्रेख्त पाठकों को उन मनमानी सीमाओं पर पुनर्विचार करने की चुनौती देते हैं जो "सम्मान" और, अंत में, महिला पहचान को परिभाषित करती हैं।

REFERENCES

Die Unwürdige Greisin (शीर्षक का अनुवाद: अभद्र वृद्धा). यह कहानी बर्टोल्ट ब्रेख्त के कहानी-संकलन "Kalendergeschichten" में प्रकाशित हुई है.

2. Lennox, Sara (1978). *Women in Brecht's Works*, New German Critique, Spring, p. 96.

3. Nussbaum, Laureen (1985). *The Evolution of the Feminine Principle in Brecht's Work: Beyond the Feminist Critique.* German Studies Review, Vol. 8, No. 2, p. 232.

4. "One is not born, but rather becomes, woman." Beauvoir, Simone De (2011). The Second Sex, London, p. 273

5. वहीं, p. 273.

6.Butler, Judith (1988). Performative Acts and Gender Constitution: An Essay in Phenomenology and Feminist Theory, Theatre Journal, Dec. p. 520.

7. वहीं, p. 521.

8. वहीं, p. 520.

9. Brecht, Bertolt (1953). Kalendergeschichten, Rowohlt, Hamburg, p. 104.

10. वहीं, p.105.

11. वहीं p.105.

12. वहीं, p.106.
13. वहीं, p.109.
14. Butler, Judith (1988). Performative Acts and Gender Constitution: An Essay in Phenomenology and Feminist Theory, Theatre Journal, Dec, p. 531.
15. Brecht, Bertolt (1953). Kalendergeschichten, Rowohlt, Hamburg, p. 109.